प्रतिष्ठित रोजगार का सिद्धान्त–

प्रतिष्ठित रोजगार के सिद्धान्त को परम्परावादी, शास्त्रीय आदि नामों से जाना जाता है! जिसमें एडमस्मिथ, रिकार्डो, जे0 बी0 जे0 एस0 मिल मार्शल और पीगू शामिल थे! ***कीन्स ने जिन्हे क्लैसिकल कहा उन्ही अर्थशास्त्रियों एवं उनके समर्थक अर्थशास्त्रियों को अब नियोक्लैसिकल कहा जाता है!*** राष्ट्रीय आय के निर्धारण को रोजगार का सिद्धान्त कहा जाता है! राष्ट्रीय आय के निर्धारण का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि किसी भी अर्थव्यवस्था द्वारा वास्तव में कितना उत्पादन किया जाता हैं तथा पूर्ण रोजगार स्तर तथा संस्थिति उत्पादन में भिन्नता क्यों पायी जाती है!

रोजगार तथा उत्पादन (आय) निर्धारण वस्तुतः एक ही है, इस स्थिति में कोई भी व्यक्ति तभी रोजगार में कहा जायेगा जब उसके कार्य से उत्पादन में वृद्धि हो! **और चालू मजदूरी पर कार्य करने के इच्छुक सभी व्यक्तियो को कार्य प्राप्त हो जाये तो उसे पूर्ण रोजगार कहा जायेगा** , और इस पूर्ण रोजगार में भी कुछ लोग ऐच्छिक रूप बेरोगार हो सकते है!

पूर्ण रोजगार से सम्बन्धित दो प्रकार की बेरोजगारियां :–

पूर्ण रोजगारी की स्थिति में भी दो प्रकार की बेरोजगारियां पाई जा सकती हैं।

(1) संघर्षात्मक बेरोजगारी– गार्डनर के अनुसार " संघर्षात्मक बेरोजगारी वह बेरोजगारी है जिसका सम्बन्ध एक गतिशील अर्थव्यवस्था में कार्य या नौकरी को बदलने से होता है।

(2) संरचनात्मक बेरोजगारी – गार्डनर के अनुसार "संरचनात्मक बेरोजगारी वह बेरोजगारी है जो कुछ उद्योगों के दीर्घकालीन ह्रास के कारण उत्पन्न होती है।" यह बेरोजगारी अर्थव्यवस्था की संरचनात्मक ढांचे से सम्बन्धित है।

नियोजित तथा वास्तविक बचत तथा निवेश

नियोजित या प्रयोजित या इच्छित या वांछित बचत वह बचत है जो बचत करने वाले लोग किसी विशेष उद्देश्य की पूर्ति के लिए आय तथा रोजगार के विभिन्न स्तरों पर करने की इच्छा रखते हैं।

वास्तविक बचत वह बचत है जो किसी अर्थव्यवस्था द्वारा वास्तव में की जाती है। इसी प्रकार वास्तविक निवेश वह निवेश है जो वास्तव में किया जाता है।

अन्य शब्दों में बचत = निवेश $(S = I)$

प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने अर्थव्यवस्था को तीन भागों में विभाजित किया

1– वस्तु बाजार 2– श्रम बाजार 3– पूँजी बाजार

मान्यताएं–(Assumptions) रोजगार का क्लासिकी सिद्धात निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है –

1.बिना विदेशी व्यापार के तथा बिना सरकारी हस्तक्षेप के पूंजीवादी अर्थव्यवस्था पाई जाती है

2.श्रम और वस्तु बाजारों में पूर्ण प्रतियोगिता पाई जाती है

3.श्रम साधन समरूप होता है

4.अर्थव्यवस्था का कुल उत्पादन उपभोग और निवेश पर व्यय हो जाता है

5.मुद्रा की मात्रा दी हुई होती है

6.मुद्रा मजदूरी और वास्तविक मजदूरी का सीधा और समानुपातिक संबंध होता है

7.मजदूरी, ब्याज की दर और कीमतें नमन्यशील (लोचशील) है

8.पूजी स्टाक और प्रौद्योगिकी ज्ञान दिए हुए हैं

9.बिना स्फीति के पूर्ण रोजगार पाया जाता है।

उपर्युक्त मान्यताओं के आधार पर परम्परावादी अर्थषास्त्रियों ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या की!

- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री यह समझते थे कि यदि पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में कीमत प्रणाली को स्वतंत्र रूप से कार्य करने दिया जाए तो देश में पूर्ण रोजगार होने की प्रवृत्ति होती है
- प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री समझते थे कि पूर्ण रोजगार के स्तर से जो उतार चढ़ाव होते हैं वे कीमत प्रणाली के कार्य करने के फल स्वरूप स्वयं दूर हो जाते हैं